अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

स्वतंत्रता के बाद हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना

सावित्री देवी

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सार

स्वतंत्रता के बाद हिन्दी कविता केवल सौंदर्यबोध या आत्मानुभूति तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह भारतीय समाज के बदलते यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति बन गई। औपनिवेशिक शासन से मुक्ति के बाद देश के सामने सामाजिक पुनर्निर्माण, लोकतंत्र की स्थापना, वर्ग-संघर्ष, जातिगत विषमता, आर्थिक असमानता, स्त्री-विमर्श, दलित चेतना, आदिवासी प्रश्न, शहरीकरण, औद्योगीकरण तथा वैश्वीकरण जैसी अनेक चुनौतियाँ उपस्थित हुईं। इन समस्त सामाजिक परिवर्तनों और अंतर्विरोधों को हिन्दी कविता ने अपनी संवेदना का केंद्र बनाया। प्रस्तुत समीक्षा लेख में स्वतंत्रता के बाद की हिन्दी कविता में निहित सामाजिक चेतना का क्रमिक, वैचारिक एवं कलात्मक विश्लेषण किया गया है। इसमें प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तरी कविता, दलित कविता, स्त्रीवादी कविता तथा समकालीन कविता के माध्यम से सामाजिक चेतना के विविध रूपों का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द: हिन्दी कविता, सामाजिक चेतना, स्वतंत्रता के बाद, प्रगतिवाद, नई कविता, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श

1. भूमिका

साहित्य और समाज के संबंध को लेकर यह स्वीकार किया जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं, बल्कि समाज का विवेक भी होता है। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी कविता ने इस भूमिका को अत्यंत गंभीरता से निभाया। जहाँ स्वतंत्रता से पूर्व की कविता मुख्यतः राष्ट्रीय चेतना, स्वाधीनता-संग्राम और सांस्कृतिक पुनर्जागरण से जुड़ी थी, वहीं स्वतंत्रता के बाद कविता का केंद्र **स्वतंत्र भारत का सामाजिक यथार्थ** बन गया। 1947 के बाद भारत राजनीतिक रूप से स्वतंत्र हुआ, किंतु सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्तर पर अनेक प्रकार की गुलामियाँ बनी रहीं। इन्हीं विडंबनाओं ने कवियों को झकझोरा और कविता सामाजिक हस्तक्षेप का माध्यम बनी।

2. सामाजिक चेतना: अर्थ और स्वरूप

2.1 सामाजिक चेतना की अवधारणा

सामाजिक चेतना से आशय समाज की संरचना, समस्याओं, संघर्षों, मूल्यों और परिवर्तनशील स्थितियों के प्रति सजगता से है। साहित्य में सामाजिक चेतना तब व्यक्त होती है जब रचनाकार—
सामाजिक अन्याय के प्रति असहमति व्यक्त करता है
शोषित, वंचित और हाशिए के वर्ग की आवाज़ बनता है
सत्ता, व्यवस्था और परंपरा पर प्रश्न उठाता है
परिवर्तन की आकांक्षा प्रकट करता है
हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना केवल वैचारिक नहीं, बल्कि संवेदनात्मक भी है।

2.2 स्वतंत्रता के बाद सामाजिक यथार्थ

स्वतंत्रता के बाद भारत में—
विभाजन की त्रासदी
शरणार्थी समस्या
बेरोज़गारी और गरीबी
जातिगत भेदभाव
स्त्री की सामाजिक स्थिति
औद्योगीकरण और शहरीकरण
लोकतंत्र की विफलताएँ
जैसे प्रश्न उभरकर सामने आए। हिन्दी कविता ने इन सभी मुद्दों को अपने कथ्य का आधार बनाया।

3. स्वतंत्रता के बाद हिन्दी कविता का काल-विभाजन

समीक्षा की सुविधा के लिए स्वतंत्रता के बाद की हिन्दी कविता को निम्न चरणों में विभाजित किया जा सकता है—
प्रगतिवादी कविता (1947–1955)

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

प्रयोगवादी कविता (1950–1960)
नई कविता (1955–1970)
साठोत्तरी कविता (1960–1980)
दलित एवं स्त्रीवादी कविता (1980 के बाद)
समकालीन कविता (1990 के बाद)

4. प्रगतिवादी कविता में सामाजिक चेतना
4.1 प्रगतिवाद की पृष्ठभूमि

प्रगतिवाद का मूल स्रोत मार्क्सवादी विचारधारा है। इसका उद्देश्य साहित्य को समाज परिवर्तन का औज़ार बनाना था। स्वतंत्रता के बाद प्रगतिवादी कविता ने यह स्पष्ट किया कि राजनीतिक स्वतंत्रता सामाजिक और आर्थिक न्याय के बिना अधूरी है।

4.2 प्रमुख सामाजिक सरोकार

प्रगतिवादी कविता में प्रमुख रूप से—
वर्ग-संघर्ष
किसान-मज़दूर की पीड़ा
पूँजीवादी शोषण
साम्राज्यवाद का विरोध
जैसे विषय प्रमुख रहे।

4.3 प्रमुख कवि और काव्य

नागार्जुन, **त्रिलोचन**, **केदारनाथ अग्रवाल**, **शमशेर बहादुर सिंह** आदि कवियों ने सामाजिक यथार्थ को सीधी, स्पष्ट और जनभाषा में व्यक्त किया।
नागार्जुन की कविता "भूखे बच्चे" और "मंत्र कवच" सामाजिक विषमता और सत्ता-विरोध की सशक्त अभिव्यक्ति है।
"सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।"
यह पंक्ति प्रगतिवादी सामाजिक चेतना का घोषणापत्र बन गई।

5. प्रयोगवादी कविता और सामाजिक चेतना

5.1 प्रयोगवाद का स्वरूप
प्रयोगवाद ने कविता में शिल्प और भाषा के स्तर पर नवीन प्रयोग किए। सामाजिक चेतना यहाँ प्रत्यक्ष न होकर **व्यक्ति के मानसिक संघर्ष** के माध्यम से अभिव्यक्त हुई।

5.2 व्यक्ति और समाज का द्वंद्व
अज्ञेय की कविता में सामाजिक चेतना—
व्यक्ति की स्वतंत्रता
नैतिक द्वंद्व
आत्मसंघर्ष
के रूप में सामने आती है।
प्रयोगवादी कवियों ने सामाजिक यथार्थ को **अंतर्मुखी दृष्टि** से देखा।

6. नई कविता में सामाजिक चेतना

6.1 नई कविता का उदय
नई कविता ने व्यक्ति और समाज के बीच के संबंधों को अधिक गहराई से समझा। इसमें सामाजिक चेतना अधिक सूक्ष्म, यथार्थवादी और मनोवैज्ञानिक हो गई।

6.2 प्रमुख विषय
मध्यवर्गीय जीवन
शहरी अकेलापन
नैतिक पतन
रिश्तों का विघटन

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

6.3 प्रमुख कवि

मुक्तिबोध, **धर्मवीर भारती**, **श्रीकांत वर्मा**, **राजकमल चौधरी**
मुक्तिबोध की कविता "अँधेरे में" सामाजिक चेतना की दार्शनिक ऊँचाई का उदाहरण है।
"मैंने देखा
कि सत्ता की अंधी गलियों में
कविता के दुश्मन बैठे हैं।"

7. साठोत्तरी हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना

7.1 साठोत्तरी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
साठोत्तरी कविता का उद्भव 1960 के दशक के आसपास हुआ, जब स्वतंत्र भारत का मोहभंग स्पष्ट रूप से सामने आने लगा। नेहरू युगीन आदर्शवाद, विकास के सपने और लोकतांत्रिक मूल्य आम जनता की वास्तविक समस्याओं का समाधान करने में असफल सिद्ध हो रहे थे।

भूख, बेरोज़गारी, महँगाई, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अवसरवाद और सत्ता की दमनकारी प्रवृत्तियों ने कवियों को तीव्र असंतोष से भर दिया। इस असंतोष ने कविता को **आक्रामक सामाजिक चेतना** प्रदान की।

7.2 साठोत्तरी कविता के प्रमुख लक्षण
साठोत्तरी कविता की सामाजिक चेतना निम्नलिखित रूपों में व्यक्त हुई—
व्यवस्था के प्रति तीखा विरोध
सत्ता और राजनीति पर सीधा प्रहार
मध्यवर्गीय पाखंड का उद्घाटन
युवा असंतोष और विद्रोह
निराशा, आक्रोश और व्यंग्य
यह कविता न तो केवल सौंदर्यवादी थी और न ही केवल वैचारिक, बल्कि यह **अनुभूत सामाजिक यथार्थ की कविता** थी।

7.3 प्रमुख कवि और सामाजिक दृष्टि

(क) धूमिल
धूमिल साठोत्तरी कविता के सबसे मुखर कवि हैं। उनकी कविता लोकतंत्र की विफलताओं पर तीखा व्यंग्य करती है।
उनके लिए कविता केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि **सामाजिक हस्तक्षेप** का माध्यम है।
"संसद में
जो कुर्सियाँ हैं
वे जनता की नहीं
दलालों की हैं।"
धूमिल की सामाजिक चेतना व्यवस्था-विरोधी और जनपक्षधर है।

(ख) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
सर्वेश्वर की कविता आम आदमी की पीड़ा को संवेदनात्मक रूप में प्रस्तुत करती है। वे सत्ता की अमानवीयता और समाज की निष्क्रियता पर करारा प्रहार करते हैं।
"एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी
रोटी खाता है।"
यह पंक्तियाँ वर्ग-विभाजन की स्पष्ट सामाजिक चेतना को व्यक्त करती हैं।

8. दलित कविता में सामाजिक चेतना

8.1 दलित कविता का उदय
1980 के दशक के बाद हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श एक सशक्त धारा के रूप में उभरा। दलित कविता ने सामाजिक चेतना को **अनुभवजन्य और आत्मकथात्मक स्वर** दिया।
यह कविता करुणा नहीं, बल्कि **प्रतिरोध और स्वाभिमान** की कविता है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

8.2 दलित चेतना का स्वरूप
दलित कविता में सामाजिक चेतना के प्रमुख आयाम—
जातिगत शोषण का प्रत्यक्ष अनुभव
सामाजिक बहिष्कार का विरोध
ब्राह्मणवादी संस्कृति की आलोचना
समानता और मानवाधिकार की मांग
यह चेतना पुस्तकीय नहीं, बल्कि **जीवन-संघर्ष से उपजी** है।

8.3 प्रमुख दलित कवि
(क) ओमप्रकाश वाल्मीकि
उनकी कविता "ठाकुर का कुआँ" सामाजिक असमानता की सजीव अभिव्यक्ति है।
कुआँ केवल जलस्रोत नहीं, बल्कि सामाजिक सत्ता का प्रतीक बन जाता है।
(ख) अजय नवेरिया, जयप्रकाश कर्दम, तुलसीराम
इन कवियों की रचनाओं में दलित समाज का आक्रोश, पीड़ा और आत्मसम्मान स्पष्ट रूप से उभरता है।
दलित कविता सामाजिक चेतना को **नैतिक आग्रह से निकालकर राजनीतिक संघर्ष** में बदल देती है।

9. स्त्रीवादी हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना
9.1 स्त्री चेतना का विकास
स्वतंत्रता के बाद स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन के दावे किए गए, किंतु वास्तविकता में पितृसत्तात्मक ढाँचा बना रहा। स्त्रीवादी कविता ने इसी विरोधाभास को उजागर किया।

9.2 स्त्री कविता के प्रमुख सरोकार
देह और पहचान का प्रश्न
विवाह और परिवार में स्त्री की स्थिति
यौन शोषण और हिंसा
आर्थिक और मानसिक स्वतंत्रता
यह कविता स्त्री को करुणा की वस्तु नहीं, बल्कि **संघर्षशील व्यक्तित्व** के रूप में प्रस्तुत करती है।

9.3 प्रमुख स्त्री कवयित्रियाँ
(क) महादेवी वर्मा (उत्तरवर्ती प्रभाव)
यद्यपि वे छायावादी हैं, पर उनकी कविताओं में स्त्री की सामाजिक पीड़ा की गहरी चेतना है।
(ख) कात्यायनी, अनामिका, मृदुला गर्ग
इन कवयित्रियों की कविता में स्त्री की अस्मिता और सामाजिक अधिकारों की स्पष्ट माँग दिखाई देती है।
"मैं स्त्री हूँ
कोई प्रतीक्षा नहीं
मैं स्वयं निर्णय हूँ।"
यह स्वर स्त्रीवादी सामाजिक चेतना की पहचान है।

10. आदिवासी और हाशिए की आवाज़
10.1 आदिवासी चेतना का उभार
आदिवासी कविता ने विकास के नाम पर होने वाले विस्थापन, प्रकृति-शोषण और सांस्कृतिक विनाश के विरुद्ध आवाज़ उठाई।

10.2 प्रमुख विषय
जंगल और ज़मीन का अधिकार
पूँजीवादी विकास की आलोचना
सांस्कृतिक अस्मिता
यह कविता सामाजिक चेतना को **पर्यावरणीय दृष्टि** से भी समृद्ध करती है।

11. सामाजिक चेतना और भाषा–शिल्प
स्वतंत्रता के बाद की कविता में सामाजिक चेतना के साथ भाषा भी बदली—
जनभाषा का प्रयोग
अश्लीलता नहीं, यथार्थ की तीक्ष्णता

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

प्रतीकों और बिंबों का सामाजिक अर्थ
कविता अब दरबारी नहीं, **सड़क की भाषा** बोलने लगी।

12. समकालीन हिन्दी कविता की सामाजिक पृष्ठभूमि
12.1 1990 के बाद का भारतीय समाज
1990 के बाद भारतीय समाज में व्यापक परिवर्तन आए। आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG मॉडल) ने सामाजिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया।

बाज़ार का विस्तार, उपभोक्तावाद, मीडिया का प्रभाव, तकनीकी क्रांति और डिजिटल संस्कृति ने मनुष्य के जीवन-मूल्यों को बदल दिया। समकालीन हिन्दी कविता इन्हीं परिवर्तनों की संवेदनशील प्रतिक्रिया है।

12.2 सामाजिक चेतना का नया स्वरूप
समकालीन कविता में सामाजिक चेतना—
प्रत्यक्ष राजनीतिक नारों से हटकर
सूक्ष्म, व्यंग्यात्मक और प्रतीकात्मक
निजी अनुभव से सामाजिक यथार्थ तक
का रूप लेती है। यह कविता समाज के **अदृश्य शोषण तंत्र** को उजागर करती है।

13. वैश्वीकरण और बाज़ारवाद की आलोचना
13.1 बाज़ार बनाम मनुष्य
समकालीन हिन्दी कविता में बाज़ार एक सर्वशक्तिमान शक्ति के रूप में उभरता है। मनुष्य उपभोक्ता में बदल जाता है और संबंध वस्तु में।
"अब रिश्ते भी
ऑफर में मिलते हैं
और संवेदनाएँ
ईएमआई पर।"
यह व्यंग्य बाज़ारवादी सामाजिक चेतना का प्रतीक है।

13.2 कवि और दृष्टि
अरुण कमल, **असद ज़ैदी**, **मंगलेश डबराल** जैसे कवियों की कविता में बाज़ार और सत्ता का गठजोड़ स्पष्ट दिखाई देता है। मंगलेश डबराल की कविता में लोकतंत्र के खोखलेपन और पूँजी के वर्चस्व की गहरी चिंता है।

14. राजनीति, सत्ता और लोकतंत्र
14.1 लोकतंत्र का मोहभंग
स्वतंत्रता के बाद जिस लोकतंत्र की कल्पना की गई थी, समकालीन कविता उसके विघटन की साक्षी बनती है।
चुनावी राजनीति
भ्रष्टाचार
मीडिया प्रबंधन
जनविमुख सत्ता
कविता में तीखे प्रश्नों के रूप में सामने आते हैं।

14.2 कविता एक प्रतिरोध के रूप में
समकालीन कवि कविता को सत्ता के विरुद्ध **असहमति की भाषा** बनाते हैं।
"जो चुप है
वह सुरक्षित है
जो बोलता है
वह संदिग्ध।"
यह पंक्ति अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर संकट को दर्शाती है।

15. सामाजिक चेतना और पहचान की राजनीति
15.1 बहुलतावादी समाज
समकालीन हिन्दी कविता में समाज एकरूप नहीं, बल्कि बहुलतावादी है। जाति, लिंग, धर्म, भाषा और क्षेत्रीय पहचान कविता का हिस्सा बनते हैं।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

15.2 हाशिए की नई आवाज़ें
अल्पसंख्यक चेतना
क्वीयर कविता
प्रवासी अनुभव
उत्तर–पूर्व और सीमांत क्षेत्र
सामाजिक चेतना को नए आयाम देते हैं।

16. तकनीक, मीडिया और कविता
16.1 डिजिटल युग की चुनौतियाँ
सोशल मीडिया, मोबाइल और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने समाज को जोड़ने के साथ-साथ अलग भी किया है।
समकालीन कविता—
अकेलेपन
आभासी संबंधों
सूचना के आतंक
को सामाजिक समस्या के रूप में देखती है।

16.2 कविता का नया माध्यम
ब्लॉग, फेसबुक, इंस्टाग्राम और ऑनलाइन मंचों ने कविता को लोकतांत्रिक बनाया, लेकिन साथ ही गुणवत्ता और गंभीरता पर भी प्रश्न उठाए।

17. पर्यावरण चेतना और सामाजिक सरोकार
समकालीन कविता में पर्यावरण संकट एक प्रमुख सामाजिक मुद्दा बनकर उभरता है—
जलवायु परिवर्तन
विस्थापन
प्राकृतिक संसाधनों का दोहन
यह चेतना सामाजिक न्याय से जुड़ी हुई है, क्योंकि सबसे अधिक प्रभावित हाशिए के लोग होते हैं।

18. समकालीन कवियों की सामाजिक दृष्टि

18.1 अरुण कमल
उनकी कविता श्रमिक जीवन, सत्ता और बाज़ार की आलोचना करती है।

18.2 असद ज़ैदी
उनकी कविता में धर्मनिरपेक्षता, अल्पसंख्यक प्रश्न और लोकतांत्रिक मूल्यों की चिंता है।

18.3 स्त्री और दलित समकालीन स्वर
समकालीन स्त्री और दलित कवियों की कविता में सामाजिक चेतना अधिक आत्मविश्वासी और वैचारिक रूप से सशक्त दिखाई देती है।

19. सामाजिक चेतना: निरंतरता और परिवर्तन
स्वतंत्रता के बाद की हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना—
प्रगतिवाद में वर्ग-संघर्ष
नई कविता में व्यक्ति-संकट
साठोत्तरी कविता में विद्रोह
दलित–स्त्री कविता में अस्मिता
समकालीन कविता में बाज़ार–सत्ता विरोध
के रूप में विकसित होती रही है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत समीक्षा लेख से यह स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता के बाद हिन्दी कविता सामाजिक चेतना की निरंतर प्रयोगशाला रही है। कविता ने समाज की समस्याओं को केवल दर्ज नहीं किया, बल्कि उन्हें **संवेदनात्मक और वैचारिक चुनौती** में बदला।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

हिन्दी कविता की शक्ति उसकी सामाजिक प्रतिबद्धता में निहित है। जब तक समाज में अन्याय, असमानता और संघर्ष रहेंगे, तब तक कविता सामाजिक चेतना की मशाल जलाती रहेगी।

संदर्भ सूची

[1]. सिंह, नामवर — कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
[2]. शर्मा, रामविलास — प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
[3]. मुक्तिबोध, गजानन माधव — एक साहित्यिक की डायरी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
[4]. अज्ञेय — अरी ओ करुणा प्रभामय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
[5]. धूमिल — संसद से सड़क तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
[6]. नागार्जुन — सतरंगी पंखों वाला, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
[7]. त्रिलोचन — धरती, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
[8]. केदारनाथ अग्रवाल — फूल नहीं रंग बोलते हैं, लोकभारती प्रकाशन।
[9]. शमशेर बहादुर सिंह — कुछ कविताएँ, राजकमल प्रकाशन।
[10]. भारती, धर्मवीर — कविता की मौत, भारतीय ज्ञानपीठ।
[11]. वाल्मीकि, ओमप्रकाश — दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
[12]. वाल्मीकि, ओमप्रकाश — ठाकुर का कुआँ, राजकमल प्रकाशन।
[13]. कर्दम, जयप्रकाश — दलित कविता का यथार्थ, साहित्य अकादमी।
[14]. नवेरिया, अजय — दलित अस्मिता और साहित्य, वाणी प्रकाशन।
[15]. तुलसीराम — मुरदा बहाली, राजकमल प्रकाशन।
[16]. अनामिका — स्त्रीत्व का जनतंत्र, वाणी प्रकाशन।
[17]. कात्यायनी — इस पंक्ति के बीच, राजकमल प्रकाशन।
[18]. महादेवी वर्मा — श्रृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाशन।
[19]. मृदुला गर्ग — स्त्री लेखन: सरोकार और संदर्भ, राधाकृष्ण प्रकाशन।
[20]. सुधा अरोड़ा — स्त्री विमर्श: साहित्य और समाज, वाणी प्रकाशन।
[21]. डबराल, मंगलेश — आवाज़ भी एक जगह है, राजकमल प्रकाशन।
[22]. कमल, अरुण — नई कविताएँ, राजकमल प्रकाशन।
[23]. ज़ैदी, असद — कविता का प्रतिरोध, वाणी प्रकाशन।
[24]. सिंह, विजयदेवनारायण साही — लघु मानव का विद्रोह, राजकमल प्रकाशन।
[25]. सिंह, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी — आधुनिक हिन्दी कविता: सामाजिक संदर्भ, साहित्य अकादमी।
[26]. सिंह, रामस्वरूप चतुर्वेदी — हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन।
[27]. मिश्र, श्यामसुंदर — आधुनिक हिन्दी कविता का सामाजिक यथार्थ, वाणी प्रकाशन।
[28]. दुबे, मदन — साहित्य और समाज, राधाकृष्ण प्रकाशन।
[29]. सिंह, बच्चन — हिन्दी साहित्य का इतिहास, राजकमल प्रकाशन।
[30]. साहित्य अकादमी — समकालीन हिन्दी कविता: सामाजिक परिप्रेक्ष्य, नई दिल्ली।